1

भूषण के काव्य की अन्तर्वस्तु

स्नातक भाग - 2
हिन्दी प्रतिष्ठा
तृतीय पत्र

यद्यपि कवि भूषण रीतिकालीन कवि हैं तथापि उनकी कविता में वीरगाथा-त्मकता की प्रधानता है। इन्होंने महाराज शिवाजी एवं बुन्देला वीर छत्रसाल की वीरता एवं शौर्य का वर्णन करते हुए राष्ट्रीय भावना को पुष्ट करने का प्रयास किया है। देश प्रेम एवं ओज की जो धारा उनकी रचनाओं में उपलब्ध होती है, वह रीतिकाल में अन्यत्र दुर्लभ है। उनके काव्य की अन्तर्वस्तु का निरूपण निम्न रूप में किया जा सकता है :-

भूषण के काव्य में वीर रस का पूर्ण परिपाक हुआ है। महाराज शिवाजी की वीरता का अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन उनकी रचना 'शिवाबावनी' में उपलब्ध होता है।

"साजि चतुरंग सेन अंग मे उमंग भरी।
सरजा शिवाजी जंग जीतन चलत हैं।
भूषन भनत नाद बिहद नगारन के
नदी नद मद गब्बरन के रलत हैं॥"

उत्साह भाव की जागृति इन पंक्तियों को पढ़ने से अनायास ही होने लगती है।

भूषण ने अपनी कविता में शिवाजी को ~~एक~~ एक महापुरुष के रूप में प्रस्तुत किया है जिसने देश की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व दाव पर लगा देता है। वे मुगलों से टक्कर ली और मुस्लिम अत्याचारों का विरोध करते हुए हिन्दुओं के धर्म की तथा हिन्दुत्व

के धर्म की रक्षा की ! —

" हिन्दुन की चोटी रोटी राखी है सिपाहिन की।
कांधे में जनेऊ राख्यो मालाराखी गर में॥"

देश प्रेम से ओतप्रोत भूषण की कविता को काव्य-रसिकों ने बहुत पसंद किया। वे अनावश्यक चाटुकारिता से हमेशा अलग रहे। वे अन्य राजाओं की प्रशंसा नहीं करते, केवल शिवाजी और छत्रसाल के प्रशंसक थे। भूषण की कविता में जनसामान्य का स्वर विद्यमान है उसमें पूरा भारत राष्ट्र गूंज रहा है, उसकी भावना में संपूर्ण जन-जीवन समाहित है और उसकी वीर भावना में भारत राष्ट्र की ओजमयी पीड़ा की ध्वनि निकल रही है

कवि भूषण के सामने राष्ट्रीय सम्मान की रक्षा का प्रश्न था धार्मिक स्थानों को

अपवित्र किया जाना, मंदिर गिराकर मस्जिदों का बनाया जाना सांस्कृतिक मान्यताओं की समाप्ति, आदि के प्रयास उस समय औरंगजेब के द्वारा हो रहे थे। उस औरंगजेब से शिवाजी महाराज ही संघर्ष कर रहे थे। अतः कवि भूषण ने शिवाजी को आदर्श मानकर जनता को जागृत करने के कार्य कविता के जरिए किया।

भूषण की कविता वीर रस एवं ओज गुण से सम्पन्न है। उसमें युद्धों का सजीव वर्णन किया गया है। सेना के प्रयाण करते समय उड़ने वाली धूल के बवंडर में सूर्य एक छोटे तारे जैसा टिमटिमाता नजर आ रहा है तथा पृथ्वी पर चारों ओर खलबली मच गई है। उसका सजीव वर्णन भूषण ने किया है।

"हैल फैल खैल भैल खलक में गैल-गैल ।
गजन की ठेल-पेल सैल उसलत हैं ।
तारा सो तरनि धूरि-धारा मैं लगत जिमि,
थारा पर पारा पारावार यों हलत है ।।"

अर्थात् थाल पर रखा हुआ पारा जैसे हिलता है उसी प्रकार शिवाजी की सेना चलने पर समुद्र हिलने लगता है। भूषण ने योद्धाओं की मनोदशा, उत्साह, आदि का सजीव चित्रण किया है।

राष्ट्रीय भावनाओं के कवि भूषण की कविता में धार्मिक भावनाओं की भी अभिव्यक्ति हुई है वे अनुभव कर रहे थे कि हिन्दू धर्म पर संकट है। औरंगजेब उसे नष्ट करने पर तुला हुआ है। मुस्लिम सभ्यता एवं संस्कृति का बलपूर्वक प्रचार कर रहा है यह देखकर भूषण का मन व्यग्र हो उठा।

⑥

तत्कालीन हालात का निरूपण कवि ने निम्न पंक्तियों में किया है:

"बैठी डुकानें लैके रानी रजवारन कों,
तहाँ आइ बादशाह राह देखै सबकी।
बेरिन को यार और यार है जुगाइन को,
राइन को भी खबरदार गए दबकी।
दक्खिन के नाथ ऐसी दौरि धरें मूंछे आय
शिवा जी न होते तो है सुनात होती सबकी॥"

उपर्युक्त विश्लेषण से साफ है कि भूषण के काव्य की अंतर्वस्तु तत्कालीन युग और समाज से जुड़ी हुई है उन्होंने शिवाजी एवं छत्रसाल के रूप में दो जननायकों के शौर्य एवं पराक्रम की सच्ची प्रशंसा कर जनता में उत्साह का संचार किया और अपनी ओजस्वी वाणी में राष्ट्रीय भावनाओं को उस समय अभिव्यक्त किया जब उसकी महती आवश्यकता थी।